चलचित्रों में पर्शव संगीत में ध्वनि अभिलेखन व पुनर–उत्पादन की भूमिका ।

बलजिंदर सैनी
Associate professor (music Instrumental)
S-U-S-Govt- College,Matak Majri,Indria

1. **Wax recording** – वायु के कंपनियों को सबसे पहले लेआन काटने सन 1857 ईस्वी में धवन अंकित करने में सफलता प्राप्त की। आगे चलकर यह रिकॉर्डिंग अंतर सुना दो ग्रास के नाम से पेटेंट कराया गया। सन् 1807 में थामस अल्वा एडिसन नामक व्यक्ति ने फोटोग्राफ को ऐसी ध्वनियों को अंकन करने का माध्यम बना लिया जिन्हें दोबारा सुना जा सकता था। प्रारंभ में धातु के पतली चादर का रिकार्ड तैयार किया गया बाद में वैक्स के रिकार्ड बनाए गए। वायु के दबाव को अंकित करने वाले माइक्रोफोन का आविष्कार होने से ध्वनि की रिकार्डिंग करना सरल हो गया।

2. **विद्युत धवन्यंकान** – यंत्रों का विद्युतीकरण होने से ध्वनि को इच्छित रूप से अधिक वॉल्यूम में सुना जाने लगा। साउंड बॉक्स का विद्युतीकरण होने से उसे पिकअप नाम से जाना गया। जिससे गुजराती आवाज एंपलीफायर के द्वारा बौद्धिक होकर लाउडस्पीकर के माध्यम से निश्चित होकर दूर दूर तक सुनाई पड़ती है। Loudspeaker or microphone द्वारा किसी भी ध्वनि का प्रक्षेपण करना संभव हो गया। ऐसे ध्वनि कंपनी को ऊर्जा में परिवर्तित करके रेडियो द्वारा सर्वत्र सुना जाता है।

3. **विद्युत से ध्वनि का पुनर उत्पादन** – इसे इलेक्ट्रिकल रिप्रोडक्शन कहते हैं, अर्थात रिकार्ड की गई ध्वनि को सुनना। जब किसी ध्वनि का प्रस्तुतीकरण कैसे बड़े हाल में हो तो वहां बिना विद्युत वाले ग्रामोफोन द्वारा इतने बड़े पैमाने पर ध्वनि सुनाई नहीं जा सकती जोकि पूरे हाल के लिए पर्याप्त हो इसलिए ऐसे स्थान पर लाउडस्पीकर अर्थात विद्युत द्वारा उत्पादित ध्वनि का सहारा लेना पड़ता है। ऐसी स्थिति में ग्रामोफोन के

साउंड बॉक्स के स्थान पर पिकअप लगाना पड़ता है।

4. मैग्नेटिक रिकॉर्डिंग – सन 1898 में ट्यूशन नामक व्यक्ति ने बयानों के तार को चुंबकीय बनाकर वायार रिकॉर्ड तेयार किया। इस प्रकार एडिसन, बरलिनात, और पॉलसन के प्रेत राशि भविष्य में चुंबकीय पत्ती वाले टेप रिकॉर्डर ओं के अविष्कार का द्वार खुल गया। मैग्नेटिक रिकॉर्डिंग पद्धति सन 1900 में डेनिस फिजिसिस्ट वाल्डेमर पल्शन ने बनाई। आज का कैसेट रिकॉर्डर इसी की देन है। जिसका सर्वत्र प्रचार है। रिकॉर्डिंग ,रि रीकॉर्डिंग ,बैकग्राउंड रिकॉर्डिंग, मल्टी चौनल रिकॉर्डिंग ,सॉन्ग डबिंग तथा मिक्सिंग इत्यादि सभी विधियां रिकॉर्डिंग कि उपरोक्त विधियों से लाभान्वित होकर प्रकाश में आई। मैग्नेटिक टेप के धवन्यंकनो को सेल्यूलाइट फिल्म के संचालन के साथ सह भागी करके फिल्म की शूटिंग के समय भी उपयोग में लाया जाने लगा।

Selaulaid **फिल्म धव्यंकान** – देसी शताब्दी के प्रारंभ में फोटोग्राफिक फिल्म की पत्ती के ऊपर ध्वनि को रिकॉर्ड करना संभव हो गया। साउंड फिल्म और मूवी फिल्म के नेगेटिव ओ को एक दूसरी फिल्म में परिवर्तित करके जिस फिल्म का निर्माण हुआ वह टाकी फिल्म कहलाई।

फिल्म पर साउंड रिकॉर्डिंग की यह प्रणाली जब प्रकाश केंद्रों के माध्यम से संपन्न होती है तो उसे optical प्रणाली कहते हैं। और जब कैसे टेप रिकॉर्डर में मैग्नेटिक हेड्स के द्वारा संपन्न होते हैं तो उसे मैग्नेटिक रिकॉर्डिंग कहा जाता है जैसे साधारण लोग एक रिकॉर्डिंग करते हैं।

फिल्म अब्दुल्लाह खन में ध्वनि को प्रकाश की आवृत्ति तीव्रता परिवर्तन में बदलकर फिल्म के ऊपर उसका चित्रण किया जाता है। फिल्म का प्रदर्शन होने पर छवि के अंकन की क्रियाएं और उससे संबंधित ध्वनियां एक ही समय पर दिखाई और सुनाई पड़ती रहती हैं। फिल्म अभिलेख प्रळिया दो प्रकार के होते हैं एक परिवर्तनशील घनत्व विधि और दूसरे परिवर्तनशील क्षेत्रफल विधि।

फिल्म से ध्वनि का पुर्नउत्पादन – इस प्रक्रिया में ध्वनि रिकॉर्डिंग को छवियों के चित्रण थे इतना आगे रखा जाता है कि फिल्म के चलने पर ध्वनि तथा चित्र सहित ठोकर हमारे मित्र तथा कानों तक पहुंचे।

फिल्म में धवन्यंकाना और उसके पुर्नउत्पादन के कला के विकास के

कारण ही पार्श्व गायन की प्रथा संभव हो सकी अर्थात गीत किसी का गाया होता है लेकिन परदे पर ओंठ कोई दूसरा चलाता है।

फिल्मों में यह धवन्यंकना अल्ट्रावायलेट रिकॉर्डिंग, स्टिरियोफोनिक यंत्र, कंपैक्ट डिस्क ,सीडी ,कंप्यूटर, चिप्स आदि वैज्ञानिक संसाधनों के द्वारा की जाती है।

फिल्मों में साउंड ट्रैक जुड़ने से फिल्मों में पार्श्व संगीत का बड़ा विकास हुआ। पार्श्व संगीत , अभिनय और दृश्य को अधिक प्रभवशाली बनाने में सहायता करता है। फिल्म का एक–2 दृश्य देख कर उसके अनुरूप पार्श्व संगीत का निर्माण किया जाता है और उसे अलग–2 साउंड ट्रैक पर रिकार्ड कर लिया जाता है। बाद में संवाद,गीत,पार्श्व संगीत और ध्वनि के अलग–2 प्रभावों वाले समस्त साउंड ट्रेकों को मिला कर एक ही पसिटिव फिल्म ट्रैक पर उतार लिया जाता हैं। जिसे फिल्म की भाषा में फाइनल प्रिंट कहा जाता हैं। पहली बोलती फिल्म आलम – आरा से लेकर आज तक बहुत सी फिल्में बन चुकी हैं, और बहुत से गानें रिकार्ड हो चुके हैं।संगीत की कोई विधा ऐसी नहीं है जिसका परिस्कृत और मधुर रूप फिल्म संगीत में प्रयोग न हुआ हो। और यह सब फिल्मों में ध्वनि अभिलेखन (रिकॉर्डिंग) और पुनरूत्पादन की वजह से संभव हो पाया है।